पोलीहाऊस खेती

एक अध्यात्म-मिश्रित भौतिक शौक

लेखक- प्रेमयोगी वज्र

2020

वैधानिक टिप्पणी (लीगल डिस्क्लेमर)-

इस पुस्तक को किसी पूर्वनिर्मित साहित्यिक रचना की नक़ल करके नहीं बनाया गया है। फिर भी यदि यह किसी पूर्वनिर्मित रचना से समानता रखती है, तो यह केवल मात्र एक संयोग ही है। इसे किसी भी दूसरी धारणाओं को ठेस पहुंचाने के लिए नहीं बनाया गया है। पाठक इसको पढ़ने से उत्पन्न ऐसी-वैसी परिस्थिति के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे। हम वकील नहीं हैं। यह पुस्तक व इसमें लिखी गई जानकारियाँ केवल शिक्षा के प्रचार के नाते प्रदान की गई हैं, और आपके न्यायिक सलाहकार द्वारा प्रदत्त किसी भी वैधानिक सलाह का स्थान नहीं ले सकतीं। छपाई के समय इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि इस पुस्तक में दी गई सभी जानकारियाँ सही हों व पाठकों के लिए उपयोगी हों, फिर भी यह बहुत गहरा प्रयास नहीं है। इसलिए इससे किसी प्रकार की हानि होने पर पुस्तक-प्रस्तुतिकर्ता अपनी जिम्मेदारी व जवाबदेही को पूर्णतया अस्वीकार करते हैं। पाठकगण अपनी पसंद, काम व उनके परिणामों के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं। उन्हें इससे सम्बंधित किसी प्रकार का संदेह होने पर अपने न्यायिक-सलाहकार से संपर्क करना चाहिए।

मित्रो, पोलीहाऊस फार्मिंग का एक अपना अलग ही क्रेज है। इससे जहाँ शौक पूरा होता है, वहीँ पर खाने को ताजा व जैविक तौर पर उगाई गईं सब्जियां भी मिलती हैं। यदि पोलीहाऊस बड़ा हो, तो सब्जियों को बेचकर अच्छी आमदन भी कमाई जा सकती है। पोलीहाऊस की एक खासियत यह है कि हम उसमें सब्जियों को बिना किसी रासायनिक खाद व कीटनाशक के उगा सकते हैं। इसलिए उसमें उगी सब्जियां स्वास्थ्य के लिए सर्वोत्तम होती हैं। एक योगी के लिए तो वे बहुत बढ़िया होती हैं। वैसे भी योगियों का शरीर और मन बहुत संवेदनशील होते हैं। वे रासायनिक चीजों को एकदम से नकार देते हैं।

हमारे देश भारत की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत में भी पौधों को जीवित और देव स्वरूप माना गया है। वृक्ष योनि को भी एक जीव योनी ही माना गया है। आधुनिक भारत के सर जगदीश चन्द्र बसु ने तो बहुत सी ऐसी वैज्ञानिक मशीनें बनाईं, जिन्होंने पेड़-पौधों के जीवन को बारीकी से पकड़ा। उन्होंने बहुत से वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध कर दिया कि पौधों में जीवन होता है, और वे भी चलायमान जीव-जंतुओं की तरह बहुत सी भावनात्मक संवेदनाओं को प्रकट करते हैं। इन सभी बातों से सिद्ध हो जाता है कि पोलीहाऊस एक प्रकार से उन जीवधारियों के लिए एक सुविधा-संपन्न घर है, जिन्हें सदियों से बेघर रहना पड़ा है। इस प्रकार से पोलीहाऊस एक उत्कृष्ट प्रकार की देवपूजा या देवसेवा ही है।

दोस्तों, पोलीहाऊस का शौक मुझे तब चढ़ा, जब अक्सर मेरी मुलाकात हि०प्र० के कृषि अधिकारियों से होने लगी। वे मुझे अतिथि किसान-वाक्ता के रूप में विभिन्न कैम्पों में बुलाते रहते थे। उन मामलों में मैं उनसे उनके कार्यालयों में भी मिला करता था। तब कई बार उनके साथ पोलीहाऊस के संबंध में चर्चा हो जाया करती थी। और अधिक छानबीन के लिए मैं इंटरनेट का सहारा भी लेता था। वास्तव में इंटरनेट केवल अतिरिक्त सहायता ही देता है। किसी काम को शुरू करने के लिए किसी मानव-रूपी विशेषज्ञ/गुरु की प्रेरणा की जरूरत तो पड़ती ही है। तभी वह काम हर दृष्टि से पूर्ण फल दे पाता है। हालांकि सीधे तौर पर भी इंटरनेट से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। खैर, पहले तो मैं पोलीहाऊस को अपनाने से हिचकिचाता रहा। एक विशेषज्ञ ने तो मुझे निरुत्साहित भी किया था। उन्होंने बताया कि पोलीहाऊस चलाने के लिए किसी वैज्ञानिक रूप से दक्ष आदमी की पूर्णकालिक सेवा की जरूरत पड़ती है। घर के आम आदमी उसे नहीं चला सकते। वैसे तो वे सच्चाई ही बयाँ कर रहे थे। पर यह भी सच है कि कोई भी आदमी पेट से सीख कर नहीं आता। छोटी शुरुआत ही आगे चलकर बड़े काम का रूप ले लेती है। मैं तो काम-धंधे की खोज में घर से बाहर ही रहा करता था। अपने घर वालों की निपुणता पर मुझे विश्वास ही नहीं हुआ। इसलिए एकबार फिर मैंने सरकार से सब्सीडाईजड पोलीहाऊस के लिए आवेदन करना टाल दिया था।

लगभग छः महीनों के बाद पोलीहाऊस बनाने का सपना फिर से मेरे मन में जागने लगा। मैं फिर से अपने जाने-पहचाने कृषि अधिकारियों से मिलने उनके कार्यालयों में जाने लगा। अनेक प्रकार की किसान-सम्बंधित चर्चाओं के बीच में पोलीहाऊस-सम्बंधित चर्चा भी को भी मैं डाल देता था। पहले मैं पोलीहाऊस किचन गार्डन बनाने के बारे में सोचने लगा। उसका आकार 40 स्कवायर मीटर (10 मीटर बाय 4 मीटर) का था, जो न्यूनतम था। परन्तु वह केवल नर्सरी उगाने के लिए, छोटा व इन्द्रधनुष की तरह गोलाकार था। उसमें तो आदमी सीधा भी खड़ा नहीं हो सकता था। इसलिए वह किचन गार्डनिंग के लिए भी नाकाफी था। दूसरा व उससे बड़ा आकार 105 स्क्वायर मीटर (15 मीटर बाय 7 मीटर) का था। वह

पूरा बड़ा पोलीहाऊस था। वह किचन गार्डन के लिए पर्याप्त था। पर उसमें व्यावसायिक खेती करना मुश्किल था। उससे एक आदमी के गुजारे लायक आमदन नहीं हो सकती थी। एक छोटे व मध्यम अआकार के परिवार के लिए तो उससे ताजा सब्जियों की जरूरत पूरी हो सकती थी। इसलिए कृषि अधिकारियों ने मुझे 250 स्कवायर मीटर (25 मीटर बाय 10 मीटर) का पोलीहाऊस लगाने की सलाह दी। मैं उस समय कोई निर्णय नहीं ले सका। मैंने वह निर्णय भविष्य के लिए छोड़ा। उस समय तो मैंने पोलीहाऊस के लिए आवेदन करना ही उचित समझा। पोलीहाऊस का चुनाव तो आवेदन के सैंक्शन होने के बाद माँगा जाता था। मैंने एक फ़ार्म भरकर आवेदन कर दिया था। यद्यपि उसका नंबर 2-3 साल बाद आया, क्योंकि आवेदकों की लाइन बहुत लम्बी थी।

एकबार मैं एक किसान मित्र के घर गौ-सेवा के कार्य से गया था। वहां पर उस मित्र ने मुझे अपना बड़ा पोलीहाऊस दिखाया। उसकी छत व दीवारों के प्लास्टिक लिफाफों को बंदरों ने बुरी तरह से क्षतिग्रस्त किया हुआ था। शायद इसीलिए मुझे वह बहुत बड़ा लगा। मैं उस जंजाल को देखकर घबरा गया। उसमें बड़े-छोटे अनेक प्रकार के अल्यूमीनियम के पाईप लगे थे। मुझे बंदरों का डर भी सताने लगा। हालांकि कृषि अधिकारियों ने बताया कि बंदरों की समस्या उसे जंगल में और घर से दूर बना कर आती है।

बहुत से पोलीहाऊसों को मैंने देखा भी था, और उनके बारे में पढ़ा-सुना भी बहुत था। परन्तु किसी चीज पर तब तक विश्वास नहीं होता, जब तक उसे खुद करके न देख लो। सबसे अच्छी व व्यावहारिक जानकारी भी तभी मिलती है। खैर, दो साल बाद मुझे कृषि-कार्यालय से फोन आया। मुझे मेरे पोलीहाऊस के सेंक्शन होने की बात बताई गई। साथ में बताया गया कि पोलीहाऊस के मालिक को पांच-सात दिन के, पोलीहाऊस से सम्बंधित प्रशिक्षण के लिए जाना होगा। वह प्रशिक्षण पूरी तरह से निःशुल्क था। उसका आयोजन कृषि विभाग ने ही किया था। वह पोलीहाऊस मैंने अपने चाचा के नाम पर एप्लाई किया हुआ था, जो अधेड़ उम्र के थे। कृषि तो वे पहले से ही करते थे, इसलिए उन्हें पोलीहाऊस फार्मिंग में दिक्कत न आती। मैं उन्हें घर से 2-5 किलोमीटर दूर ट्रेनिंग सेंटर तक छोड़ आया। वहां पर बहुत से किसानों का ग्रुप इकट्ठा हो गया था। उन्होंने ट्रेनिंग का बहुत आनंद लिया। उन्हें वहां का माहौल, शिक्षा पद्धति, खान-पान, रहन-सहन, मित्र-मंडली आदि सभी कुछ बहुत पसंद आया। सभी वस्तुएं व सेवाएं उन्हें उच्च गुणवत्ता की लगीं। वास्तव में वे अशिक्षा के माहौल के कारण कभी घर से बाहर गए ही नहीं थे। ये सभी बातें उन्होंने स्वयं अपने मुख से कही थीं। जब ट्रेनिंग पूरी होने पर मैं उन्हें लेने प्रशिक्षण केंद्र में एक मित्र के साथ पहुंचा, तो बड़ा मजा आया। वह एक विश्वविद्यालय था। चारों ओर बहुत सुन्दर दृश्य थे। हरे-भरे दृश्य थे। साफ-सुथरी सड़कें थीं। बड़े-2 भवनों में सुन्दर व रंगीन चार्ट थे, जिनमें विविध जानकारियाँ दी गई थीं। विभिन्न प्रकार की प्रदर्शनियां जगह-2 पर लगी थीं। खैर, मैंने चाचा को भीड़ में पहचान लिया, जो एक अन्य, परिचित से लग रहे आदमी के साथ खड़े थे। दोनों ने मित्रतापूर्वक रहकर प्रशिक्षण के दौरान बहुत अच्छा समय बिताया था। चाचा ने हम दोनों की मुलाकात करवाई। दरअसल वे एक वैदिक पुरोहित थे। उन्होंने अपने नाम पर अपने पिताजी के लिए एक पोलीहाऊस के लिए एप्लाई किया हुआ था। वे बतौर सरकारी शिक्षक सेवानिवृत्त हुए थे। उन्हें पोलीहाऊस का शौक था, और उसके लिए अपना पूरा समय भी दे सकते थे।

अब समय आया पोलीहाऊस के चुनाव का। अधिकारियों ने पोलीहाऊस के 3 पूर्वनिर्धारित आकार बताए। वे तीन आकार थे, 105 स्कवायर मीटर (15 बाय 7), 250 स्कवायर मीटर (25 बाय 10), व 500 स्कवायर मीटर (50 बाय 10)। इन आकारों से अलग आकार संभव नहीं थे, क्योंकि इन्हीं तीन आकारों की फ्रेमें उपलब्ध होती थीं। खेतों को ही इन आकारों के

बराबर के आकारों का होना जरुरी था। मैंने खेतों के आकार को नाप तो लिया था, पर फिर भी संदेह था। इसलिए अधिकारियों ने प्रायोजित कंपनी के आदमी को मेरे खेतों का निरीक्षण करने के लिए भेजा। वास्तव में प्रायोजित कंपनियों की एक लम्बी लिस्ट होती है। जब मैंने विभागीय अधिकारी को ही कंपनी का चुनाव करने के लिए कहा, तब उन्होंने सबसे नजदीकी, प्रसिद्ध व तसल्लीबख्श काम करने वाली एक छोटी कंम्पनी का नाम सुझाया। खैर, उस कंपनी का मालिक अगले दिन ही मेरे घर में पहुँच गया था। 500 स्कवायर मीटर आकार का तो कोई खेत ही नहीं मिला। उसने एक खेत को 250 स्कवायर मीटर के पोलीहाऊस के लिए चिन्हित किया। दो खेतों को 105 स्कवायर मीटर के पोलीहाऊसों के लिए चिन्हित किया, और एक खेत को 40 स्कवायर मीटर के पोलीहाऊस के लिए चिन्हित किया। सभी खेत घर के नजदीक ही थे। वास्तव में कम से कम दो-दो फुट की अतिरिक्त जगह पोलीहाऊस की दोनों ओर की, लम्बाई वाली प्लास्टक-दीवार के बाहर उपलब्ध होनी चाहिए। वह पोलीहाऊस के बाहर इधर-उधर चलने के लिए होती है। दोनों तरफ न हो, तो एक तरफ तो इतनी चलने लायक जगह होनी ही चाहिए। इसी तरह पोलीहाऊस के दरवाजे के आगे भी कम से कम दो फुट के रास्ते की जगह होनी चाहिए। दरवाजे वाली छोटी/चौड़ाई वाली प्लास्टिक-दीवार के विपरीत किनारे वाली दीवार के बाहर तो कम से कम 6-8 फुट की जगह चाहिए होती है। यह इसलिए, क्योंकि वहां पर लम्बी दीवारों के लिफाफों को ऊपर की और फोल्ड करने वाली और नीचे की तरफ अनफोल्ड करने वाली प्रणाली लगी होती है। इससे वह दीवार क्रमशः खुलती व बंद होती है। पोलीहाऊस के क्रेस्ट/शीर्ष/छत के विंडो को खोलने व बंद करने वाली प्रणाली भी वहीँ होती है। खैर, कंपनी के मालिक ने चिन्हित जगहों को सीधा करने, उनके ऊपर के पेड़ों की कटाई-छंटाई करने, और कम पड़ रही जगहों को खोलने के लिए हिदायतें भी दीं। वह हमें ज्यादा से ज्यादा पोलीहाऊस बनवाने की सलाह दे रहा था। शायद वह अपने कमीशन को भी देख रहा होगा। कृषि अधिकारी ने भी अधिक से अधिक पोलीहाऊस एक ही बारी में लगाने को कहा था। उन्होंने बताया कि बहुत से लोग एक पोलीहाऊस लगवाने के बाद जब उसके फायदे समझते हैं, तब यह सोचकर पछताते हैं कि उन्होंने एक से ज्यादा क्यों नहीं लगवाए। फिर से उन्हें एप्लाई करना पड़ता है, जिससे उन्हें लाइन में फिर से सबसे पीछे लगना पड़ता है। इस तरह से उनकी दुबारा बारी आने में सालों लग जाते हैं।

मैंने उस दिन अपने चाचा के साथ विस्तार से विचार-विमर्श किया। दरअसल हमारे गाँव में पानी की भारी कमी थी। वैसे तो हमने मनरेगा की वर्षा-जल संग्रहण योजना के तहत दो बड़े आकार के टैंक पहले ही बनवा लिए थे, फिर भी वर्षा जल की भी तो अपनी एक सीमा होती ही है। मनरेगा के तहत उन टैंकों के निर्माण का वर्णन मैं आगे करूंगा। दूसरी कमी पैसे की थी। हमारे पास उस समय सीमित मात्रा में ही नगद पैसे थे, और अनिश्चित भविष्य के लिए हम किसी से उधार नहीं लेना चाहते थे। एक 105 स्कवायर मीटर के खेत में कुछ जगह को समतल करने की जरूरत थी। हमारे स्वयं के पास समय भी कम था, और उस समय कोई मजदूर आदि भी नहीं मिल रहा था। इसलिए उसे छोड़ दिया गया। नर्सरी लगाने की फिलहाल उस समय हमारे अन्दर सामर्थ्य नहीं थी। इसलिए 40 स्कवायर मीटर का पोलीहाऊस भी छोड़ दिया। अंत में एक 250 स्कवायर मीटर का और एक 105 स्कवायर मीटर का पोलीहाऊस / खेत चुना गया। दोनों बहुत उपयुक्त स्थान पर थे। वहां पर तेज हवाएं भी नहीं चलती थीं, और धूप भी अच्छी लगती थी। दोनों ही खेत पानी के टैंकों से नीची जमीन पर थे। इसलिए ग्रेविटी से पानी का प्रेशर वहां तक अच्छा बनता था।

अगले दिन मैं चाचा को साथ लेकर कंपनी के दफ्तर में पहुँच गया। मैंने उनसे कंपनी के साथ साझीदारी के लिए बने समझौता प्रपत्र /एफिडेविट पर हस्ताक्षर करवाए। साथ में, लाभार्थी अंश/बेनेफिशियरी शेयर के रूप में कुछ पैसे भी जमा करवा दिए। लाइन में हमारा नम्बर काफी पीछे था, इसलिए पोलीहाऊस फिट करने के लिए हमारी बारी आने में महीने से

अधिक का समय लग जाता। मैंने किसी काम के सिलसिले में बाहर जाना था, इसलिए कृषि अधिकारी की सिफारिश लगवा कर 15-20 दिन में ही काम शुरू करवा दिया। कईयों को तो ऊंची पहुँच भी लगानी पड़ा जाती है। तीन-चार दिनों तक कंपनी के कर्मचारी हमारे घर में लगातार काम करते रहे। वे उतने दिनों तक रात को हमारे घर में ही सो जाते थे। वे ओवरटाईम भी लगा रहे थे, क्योंकि दिवाली पास में थी, जिससे वे जल्दी काम से फारिग होना चाहते थे। उनका काम बड़ा तकनीकी व दक्षतापूर्ण होता है। प्लास्टिक की शीट बिलकुल तनी हुई होनी चाहिए, नहीं तो वह तेज हवाओं से फड़ाफड़ा कर फट भी सकती है। जी.आई. पाईप की फ्रेमों पर उसे स्क्रियू से फिक्स किया जाता है। स्क्रियू ड्राईवर मशीन भी आधुनिक थी, जो होल ड्रिल करने के साथ स्क्रियू भी खुद ही लगा कर टाईट भी कर देती थी। सबसे पहले तो जी.आई. पाईप का जाला बनाया जाता है। यह काम वैल्ड करके किया जाता है। इसलिए खेत के नजदीक में बिजली भी उपलब्ध होनी चाहिए। कई कम्पनियां नट-बोल्ट से जोड़कर भी जाला बनाती हैं। इससे पूरे पोलीहाऊस यूनिट को एक खेत से दूसरे में स्थानांतरित किया जा सकता है। वैसे ऐसा करने की जरूरत बहुत कम मामलों में ही पड़ती है। इसका एक नुक्सान यह भी है कि समय के साथ नट-बोल्ट ढीले होते रहते हैं। एक तकनिकी दक्षता यह होनी चाहिए कि दीवारों या छत का कोई स्थान खुला नहीं रहना चाहिए, जो प्लास्टिक शीट से ढका न हो। कई बार ठण्ड में अन्दर हीटिंग देनी पड़ सकती है। इस खुले स्थान से हीट बाहर भाग जाती है। मेरे पोलीहाऊस के एक दीवार के कोने की शीट में आधा फुट का गैप था। मैंने कृषि अधिकारी को फोन करके वह कमी बताई, तो कंपनी का कर्मचारी अगले दिन ही बाईक पर आकर वहां प्लास्टिक शीट का जोड़ लगा गया।

दोस्तों, पोलीहाऊस की बड़ी-२ फ्रेमें जुड़ी-जुड़ाई आती हैं। वे वैसे तो हलकी होती हैं, पर उन्हें ढोना बेढंगा जैसा होता है। वे धनुष के जैसी बड़ी-२ आकृतियाँ होती हैं। हमने 2 नेपाली गोरखों को उन्हें सड़क से खेत तक (लगभग डेढ़ किलोमीटर का सफर) ढोने के लिए लगाया हुआ था। वे मजाक में उन्हें राम-धनुष कहते थे। ढोने की इसी मुश्किल के कारण उन्हें ढोने में जरूरत से ज्यादा समय लगा।

प्लास्टिक शीट का केबिन बन जाने पर अन्दर का काम होता है। मुख्य केबिन से जुड़ा हुआ एक छोटा सा केबिन भी होता है। वह जूते वगैरह बदलने के लिए, दवाई वाले पानी में पैर डुबोने के लिए, कपड़े बदलने के लिए, व औजार आदि रखने के लिए होता है। हम तो एसी कोई विशेष फोर्मेलिटी नहीं कर पाए। हाँ, उसमें एक पानी का 250 लीटर वाला ड्रम जरूर रखा हुआ था। उसे पाईप से भर लेते थे। कई बार वह पानी इधर-उधर की जरुरत में काम आ जाता था। वैसे, सिंचाई तो ड्रिप इरिगेशन से होती थी। उस छोटे केबिन के दोनों और दरवाजा होता है। उसे बंद रखना पड़ता है। ग़लती से बाहर से आया हुआ कीड़ा-मकोड़ा उसमें कैद हो जाता है, और उसमें पैदा हुई गर्मी से मर जाता है। मुख्य केबिन की लम्बाई वाली, नीचे की दीवार को प्लास्टिक की बारीक छेद वाली जाली से बनाया जाता है। उससे हवा का आना-जाना होता है, और उससे किसी कीड़े-मकोड़े का प्रवेश भी नहीं हो सकता। धरातल के पास की लगभग डेढ़-दो फुट की दीवार पर पोलीशीट ही लगी होती है। वहां जाली नहीं होती। यह इसलिए, ताकि पानी अन्दर न आए। साथ में,, कार्बन डाईआक्साईड गैस भारी होने से नीचे बैठ जाती है, जिसका प्रयोग पौधे अपना भोजन बनाने के लिए करते हैं।

पोलीहाऊस का केबिन बन जाने के बाद उसमें शेड नेट लगाया जाता है। वह एक हरे रंग की जाली होती है, जो ऊपर से आ रही धूप को धीमा कर देती है। इसके नीचे और ऊपर के तापमान के बीच में 10 डिग्री का अंतर होता है। इससे उच्च गर्मी के महीनों में पौधों का बचाव हो जाता है। उसे खोला व बंद किया जा सकता है, खिड़की के परदे की तरह। उसके नीचे स्पिंकलर का जाल होता है। वे दरअसल छोटे-छोटे फव्वारे जैसे होते हैं, जो स्थान-२ पर लटके होते हैं। वह जाल

पोलीहाऊस की मुख्य पाईपलाईन से वाल्व के माध्यम से जुड़ा होता है। जब उनका वाल्व खोला जाता है, तब उनसे पानी की एक धुंध जैसी बारीक फुहार निकलती है। वह फुहार पोलीहाऊस का तापमान 10 डिग्री तक कम कर देती है। आजकल तो हाईटेक पोलीहाऊस भी बन गए हैं। उनके टेम्प्रेचर सेंसर जब ज्यादा गर्मी को सेन्स करते हैं, तब वे स्प्रिंकलर खूद ऑन हो जाते हैं। फिर जब तापमान सामान्य हो जाता है, तब वे खुद ही बंद हो जाते हैं। इसी तरह से जमीन में पानी की मात्रा को सेन्स करने वाला सेंसर जब जरूरत से कम पानी को सेन्स करता है, तब ड्रिप सिस्टम खुद चालू हो जाता है, और निर्धारित सिंचाई करने के बाद खुद बंद हो जाता है। इस तरह से सभी ओपरेशन ओटोमेटिक चलते हैं। परन्तु ऐसे पोलीहाऊस बहुत महंगे होते हैं, जिन्हें बिजनेसमेन ही फिट करवा सकते हैं।

पोलीहाऊस में जल प्रणाली के रूप में एक मोटा प्लास्टिक का पाईप (लगभग दो इंच मोटाई का) दरवाजे के साथ बिछा होता है, पोलीहाऊस की पूरी चौड़ाई में। उसी से एक कोने में उसी मोटाई का एक पाईप ऊपर की ओर चढ़ता है, जिससे स्प्रिंकल सिस्टम जुड़ा होता है। नीचे वाले पाईप से लगभग एक पतली पाईप पोलीहाऊस की लम्बाई में पूरी बिछी होती है। 2 फुट के गैप पर ऐसी बहुत सी पाईपें एक दूसरे के समानांतर बिछी होती हैं। हरेक पाईप फसल के एक बैड के लिए होती है। वह पाईप पतली, विचित्र व काले रंग की होती है। उसे जितना मर्जी तोड़ो-मरोड़ो, वह टूटती नहीं है। इस तरह से जितनी पाईपें हैं, उतनी ही लाईनें पौधों की लग सकती हैं। उस पाईप की पूरी लम्बाई में लगभग 4-6 इंच के फाँसलों पर एक-एक छेद होता है। वहां से बूँद-२ कर के सिंचाई के लिए पानी गिरता रहता है। लगभग एक सेकण्ड में एक बूँद गिरती है। ओन-ऑफ़ करने के लिए वाल्व/चाबी/नल भी होता है।

अन्दर की मुख्य मोटी पाईप पोलीहाऊस के बाहर लगे फिल्टर यूनिट से जुड़ी होती है। उसमें पानी का प्रेशर नापने वाला गेज भी होता है। फिल्टर यूनिट में डिस्क फ़िल्टर लगा होता है। उसमें एक सिलिंडर (जो लगभग एक लीटर की बोतल के बराबर होता है) के ऊपर पतली प्लास्टिक की डिस्कें (छल्ले जैसीं) एक के ऊपर एक करके टाईट कसी होती हैं। उन डिस्कों में बारीक धारियां होती हैं। जब वे डिस्कें आपस में जुड़ती हैं, तब उन धारियों के बीच में बहुत पतली सी जगह बनती है, जिसमें से छनकर साफ पानी अन्दर आता है। मैल उन्हीं चकतियों में फंसा रह जाता है। उन्हें साफ करने के लिए सिलिंडर के पीछे का स्क्रियू खोलकर उन्हें बाहर निकला जाता है। फिर बाल्टी आदि के खुले पानी में धोकर उन्हें फिर से फिट कर दिया जाता है।

फिल्टर यूनिट में ही सक्शन यूनिट भी जुड़ा होता है। उससे निकली एक पाईप पानी की बाल्टी में डुबोई जाती है। उस पानी में पूरे पोलीहाऊस के लिए खाद घुली होती है। सक्शन यूनिट बाल्टी से सारा पानी चूस लेता है। वह पानी सिंचाई के पानी के साथ मिश्रित होकर पूरे पोलीहाऊस में लगे ड्रिप से सभी पौधों को बराबर मात्रा में मिल जाता है। परन्तु यह सक्शन यूनिट तभी काम करता है, यदि पानी को बहाने के लिए उसे पीछे से टूलू पम्प से प्रेशर दिया जाए। ग्रेविटी का प्रेशर इतना कम होता है कि उससे सिंचाई तो हो जाती है, पर सक्शन यूनिट काम नहीं करता। हमारा सिस्टम ग्रेविटी से चलता था, इसलिए खाद वाले पानी को हमें हाथ से डालना पड़ता था। वैसे उसकी जरूरत कम ही पड़ी, क्योंकि हम जैविक खाद का ही अक्सर प्रयोग करते थे। वह तो पानी में घुलती नहीं है। फिर भी यदि बहुत ज्यादा उंचाई से पानी आ रहा हो, तब सक्शन यूनिट काम कर जाता है।

हमारे सिंचाई वाले टैंक में इधर-उधर से बहकर आया हुआ गंदा पानी होता था। काई की वजह से उसका रंग भी हरा होता था। यदि उसे सीधा ड्रिप लाइन में डाला जाता, तो उससे ड्रिप के सुराख़ ब्लोक हो जाते। उससे ड्रिप पाईपों को बदलना पड़ता। दरअसल ड्रिप यूनिट के अन्दर बहुत सूक्ष्म नलिकाओं का एक जाल होता है, जिससे पानी धारा में न गिर कर बूँद-२ करके गिरता है, चाहे पीछे से पानी का कितना ही ज्यादा प्रेशर क्यों न हो। उसमें बिलकुल साफ पानी घुसना चाहिए। पानी की गन्दगी की वजह से फिल्टर डिस्क को महीने में एक बार साफ करना पड़ता था। यदि पानी बहुत गंदा

हो, तो हर हफ्ते में भी उसे एक बार साफ करते रहना पड़ सकता है।

ड्रिप सिंचाई सिस्टम के बहुत से फायदे होते हैं। इससे पानी केवल पौधों की जड़ों के आस-पास तक ही सीमित रहता है। इससे जहाँ पानी की बचत होती है, वहीँ पर जल में घुलनशील पोषक तत्त्व भी जमीन की गहराई में, व इधर-उधर रिसकर गायब नहीं हो जाते। इससे जड़ों के आसपास पानी का दलदल भी नहीं बनता। इससे वहां की मिट्टी नम, हवादार व भुरभुरी बनी रहती है। वैसी स्थिति में खरपतवार की पैदावर भी कम होती है। दरअसल 10-15 मिनट तक ड्रिप चलने से काफी सिंचाई हो जाती है। लगता तो ऐसा है कि एक-२ बूँद गिर रही है। पर पूरे पोलीहाऊस में जगह-२ पर एक-२ बूँद गिरने से भी बहुत सा पानी बह जाता है। एक बार हाईटेक किसान बनने को बेचैन मेरी नाबालिग बेटी ने उत्सुकतावश और चोरी छिप के ड्रिप सिस्टम से पोलीहाऊस की सिंचाई शुरु कर दी, और ड्रिप को चालू ही छोड़कर घर चली आई। दो घंटे बाद जब उसका पता चला, तब तक टैंक का जलस्तर आधा फुट नीचे चला गया था। सभी ने उसे असली किसान की उपाधि से नवाजा। एकबार मैंने एक ड्रिपर (पाईप में बूँद-२ गिरने की जगह पर फूली हुई गाँठ जैसी जगह) के नीचे एक प्लास्टिक का छोटा डिब्बा 15 मिनट के लिए रखा। उसके पानी को मापा, तो वह 50 मिलीलीटर था। उतना पानी छोटे पौधे के लिए पर्याप्त था। इस तरह से पानी मापा जा सकता है। डिब्बे में हरेक 50-50 मिलीलीटर पर निशान लगाए जा सकते हैं। पौधे के लिए जरूरी पानी की मात्रा इस तरह पूरी की जा सकती है। ग्रेविटी की फ़ोर्स से जो ड्रिप चलता है, उसमें ड्रिप लाइन के आखिरी छोर पर बूँद गिरने की रफ़्तार कुछ कम हो जाती है। हालांकि यह फर्क थोड़ा ही होता है। इसी तरह, यदि जमीन पूरी तरह से समतल न हो, तो उतराई वाले छोर पर ज्यादा पानी इकट्ठा हो जाता है। वहां पर फसल बहुत ज्यादा फैलती है, इसलिए वहां फल कम लगता है, केवल हरियाली ही बढ़ती है। कृषि अधिकारी ने हमें यह पहले ही बताया था, पर हमें विशवास नहीं हुआ था। वह इसलिए, क्योंकि जमीन हमें पूरी तरह से समतल लग रही थी। वास्तव में, वाटर लेवल से स्लोप को नापकर समतल कर देना चाहिए। वैसे तो पोलीहाऊस बनने के बाद भी जमीन को समतल किया जा सकता है।

बाद में मैंने एक पोलीहाऊस वाला स्पेशल व इलेक्ट्रोनिक थर्मोमीटर भी ले लिया था। उससे भी पोलीहाऊस के रखरखाव में काफी मदद मिलती है। वह दिन-रात चलता है, और अधिकतम-न्यूनतम तापमान को भी रिकोर्ड करके रखता है। पोलीहाऊस के ऐसे सभी विशेष सामान मैं एक विशेष दुकान से लेता था, जो पोलीहाऊस का हरेक सामान रखती थी। उस दूकान के मालिक ने मुझसे एक विशेष प्रकार का छोटा स्टूल (पटला) लेने को भी कहा था, जिस पर बैठकर पोलीहाऊस में आराम से निंदाई-गुड़ाई की जा सके। पर मुझे उसकी जरूरत ही महसूस नहीं हुई। वह बूढ़े-कमजोर लोगों के लिए या जिनके घुटनों में दर्द रहता हो, उनके लिए विशेष फायदेमंद था। एक बार मैंने दुकान-मालिक से पूछा कि क्या पोलीहाऊस की प्लास्टिक शीट से प्रदूषण नहीं होता। उन्होंने नहीं में जवाब दिया। उन्होंने कहा कि ये तो पेट्रोलियम के व्यर्थ उत्पाद से बनती है। यदि उनकी प्लास्टिक शीट न बनाई जाए, तभी वे प्रदूषण पैदा कर सकते हैं।

अब पोलीहाऊस में फसल लगाने के बारे में बात करते हैं। हमने लगभग दो इंच ऊंचा व दो फुट चौड़ा बैड बनाया, जो पोलीहाऊस के एक छोर से दूसरे छोर तक पूरी लम्बाई में था। बेड की मिट्टी से सभी छोटे-बड़े कंकड़ बाहर निकाले गए। बहुत सारे कंकड़ निकले, जिन्हें देखकर हैरानी हुई। बाहर बड़ा सा ढेर लग गया था। एक तजुर्बेदार वृद्ध ने कहा कि शाम के समय उस ढेर पर आग जलाते रहने से उसकी मिट्टी बन जाएगी। शायद आग से व बाहर के ठन्डे मौसम से उन्हें गर्म-सर्द का झटका लगता है, और वे कमजोर होकर टूट जाते हैं। पर हमारे पास इतना समय व ईंधन नहीं था। उस पर दो ड्रिप पाईपें एक-दूसरे से लगभग 1 फुट की दूरी पर बिछी होती थीं। उसी एक ड्रिप पाईप के नीचे बिजाई की एक लाइन आ जाती थी। इस तरह से एक बैड पर बिजाई की दो लाईनें आ जाती थीं। दो बैडों के बीच में लगभग 1 फुट चौड़ी खाली जमीन होती थी, जो नीचाई पर होती थी। वह उरे-परे चलने के काम आ जाती थी। हमने सबसे पहले उसमें मटर की फसल लगाई, क्योंकि सर्दियां शुरू ही हो रही थीं। पहले दाने को 1-2 दिन तक भिगो कर फुलाया गया। फिर 3 इंच के

फांसले पर दाने बोए गए। इस तरह से एक दाना ड्रिपर बूँद के बिलकुल नीचे होता था, पर अगला दाना दो ड्रिपरों के बीच में आता था (क्योंकि ड्रिपर छेदों के बीच में आधा फुट का फांसला होता था)। इस तरह से वहां पर कुछ कम नमी होती थी। उस पोलीहाऊस की मिट्टी कम रेतीली थी। इसलिए उसमें पानी का उरे-परे का रिसाव अच्छा हो जाता था। ज्यादा रेतीली मिट्टी में एक ही जगह पर पानी जल्दी से नीचे छन जाता है, इसलिए उरे-परे के रिसाव को होने के लिए पर्याप्त समय ही नहीं मिलता। इससे ड्रिपरों के बीच की जमीन में अपर्याप्त नमी रह जाती है। हमारे दूसरे पोलीहाऊस में अधिक रेतीली मिट्टी थी। वहां पर उरे-परे का रिसाव पौधों के लिए तो पर्याप्त था, पर बीज की उगाई के लिए कुछ कम था। बीज की शुरूआती उगाई के लिए ज्यादा नमी चाहिए होती है। इसलिए हमने टैंक से प्लास्टिक पाईप जोड़कर व फव्वारे से पुराने तरीके से बीज-लाईनों की सिंचाई की। अंकुरण के बाद भी 8-10 दिन तक इसी तरह सिंचाई की। वास्तव में छोटे पौधे की जड़ जमीन में बहुत ऊपर होती है। वहां पर ड्रिप के पानी का उरे-परे का रिसाव नहीं होता। वास्तव में ऊपर के आधे से एक इंच तक की मिट्टी बिलकुल सूखी होती है, हवा वगैरह लगने के कारण। उसके नीचे खोदो, तो चारों तरफ भरपूर व सुन्दर नमी दिखाई देती है। मटर की फसल को कम ही नमी चाहिए होती है। यदि अधिक पानी दिया जाए, तो हरी पत्तियों का झाड़ बेतरतीब फैल जाता है, पर फली बहुत कम लगती है। इसलिए हम हफ्ते में दो बार ही 15-15 मिनट तक के लिए ड्रिप चलाते थे। उसे पानी की अधिक मात्रा केवल फूल, व फली आने के समय चाहिए होती है। बीच में एक बार उसकी गुड़ाई की गई। खरपतवार नाममात्र का उगा था। पौधे नाजुक व बेलदार जैसे होते हैं। उन्हें सपोर्ट देने के लिए 6-6 फुट पर लकड़ी की खूँटियाँ गाड़ी गईं, और उन पर डोरी बाँधी गयी। बाजार में स्पेशल डोरी मिलती है। वह कई सालों तक काम देती है, क्योंकि बारिश-धुप के न होने से वे सड़ती नहीं। फिर बीच-२ में पौधों को उन डोरियों पर ऊपर-२ को पहनाया जाता रहा। केंचुआ खाद तो मैंने शुरू में ही, बेड बनाते समय ही उसमें भरपूर मात्रा में मिक्स की हुई थी। इसलिए बीच में खाद डालने की जरूरत ही नहीं पड़ी।

एक प्रकार से मटर की फसल ओरगेनिक ही होती है। वह कीटनाशक व रासायनिक खाद की मांग नहीं करती। उसकी जड़ों में हवा की नाईट्रोजन से यूरिया बनाने वाले कीटाणु निवास करते हैं। इसलिए यह फसल मिट्टी की उर्वरकता को भी बढ़ाती है। पानी की कमी में भी यह हो जाती है। दोनों पोलीहाऊसों से हमने लगभग 10000 रूपए के मटर बेचे।

गर्मी आने पर चाचा ने उसमें लाल-पीली शिमला मिर्च लगाईं। उसमें बिमारी शायद पनीरी के अन्दर ही नर्सरी फ़ार्म से आ गई थी। बहुत से कीटनाशकों का स्प्रे करने पर बीमारी कुछ थमी, पर पैदावार बहुत घट गई थी। गर्मी के गर्म दिनों में शेड नेट को चढ़ा दिया जाता था। उससे गर्मी तो घट जाती थी, पर साथ में पौधों को मिलने वाली रौशनी भी बहुत घट जाती थी। उससे पौधे एकाएक लम्बाई पकड़ते थे, पर बहुत पतले होते थे। पत्ते भी उनमें कम और मुरझाए जैसे होते थे। उनको भी खूंटियों व प्लास्टिक डोरी से सपोर्ट दी गई। कुल मिलाकर ज्यादा मेहनत को देखते हुए पर्याप्त आमदन नहीं हुई। मैंने सलाह दी कि ऐसी सब्जी की बजाय मूली, खीरा, धनिया आदि फसलों को लगाना चाहिए। पर चाचा को शायद पुराने समय से लेकर शिमला मिर्च उगाने का अनुभव व चस्का था, इसलिए वे उसे लगाते रहे। पोलीहाऊस के अन्दर उगाई गई शिमला मिर्च तो बाहर खुले में उगाई उसी फसल से भी कम आमदन दे रही थी। विशेषज्ञ कहते हैं कि एक बार उसमें बीमारी लगने पर तीन साल तक उस खेत में दुबारा शिमला मिर्च नहीं लगानी चाहिए। कई बार तो सारी मिट्टी को दवाई से भी ट्रीट करना पड़ता है। कई बार तो मिट्टी को ही बदलना पड़ता है। यह तो बहुत महँगा तरीका लगा। एक बार योजना बनी कि पोलीहाऊस में पपीता उगाया जाए। पर तभी मैं अपने काम के सिलसिले में घर से बहुत दूर चला गया। इसलिए उसके बाद मेरे चाचा उसमें अपने हिसाब से फसल लगाते रहे, और अपनी मर्जी का आनंद उठाते रहे।

पोलीहाऊस की सुरक्षा का भी बखूबी ध्यान रखना पड़ता है। हवा के तूफान के समय या तो उसे पूरा बंद रखो, या पूरा खुला रखो। यदि वह आंशिक रूप से खुला हो, तो उसमें हवा घुस जाती है, जो उच्च दबाव पैदा करके प्लास्टिक कवर को फाड़ सकती है। वैसे तो उसे पूरा बंद करना ही ज्यादा फायदेमंद रहता है। इसलिए मौसम विभाग से मौसम की एडवांस

जानकारी भी लेते रहना चाहिए, और तूफान की संभावना होने पर सतर्क हो जाना चाहिए। चेतावनी के दिनों में उसे पूरा बंद करके ही रात को सोना चाहिए। पोलीहाऊस को दूसरे नंबर का नुक्सान तेज धुप से पहुंचता है। धुप की यू.वी. रेडिएशन उसका क्षरण करती है। तीसरा नुक्सान गर्म-सर्द (पाला लगना) से होता है। मैदानी भागों में कम से कम 5 साल तक का जीवन होता है पोलीहाऊस का। पहाड़ों में धुप कम तीखी होती है, इसलिए वहां कम से कम 10 साल तो चल ही पड़ता है। इसी तरह, उसके दरवाजे में ताला वगैरह भी लगा रहना चाहिए, ताकि उसमें बच्चे या चोर-उचक्के न घुसे। सर्दियों में, पोलीहाऊस को दिन में थोड़ी देर खोलना भी जरूरी होता है, ताकि शुद्ध हवा अन्दर जा सके, और अशुद्ध हवा बाहर आ सके, क्योंकि पौधे भी हमारी तरह ही सांस लेते हैं।

एक मानव-शरीर से पोलीहाऊस की दार्शनिक तुलना

दोस्तों, आत्म-प्राप्ति के लिए उतनी ही आवश्यक अनुकूल परिस्थितियों की अधिकता चाहिए होती है, जितना कि किसी ग्रह पर जीवन का समर्थन करने के लिए आवश्यक है। इसके अलावा, सांसारिक तरीकों से आत्म-बोध (अलग-अलग प्रभावशीलता के साथ) एक ही जीवन में संभव नहीं है। यह एक बहु-जीवन घटना है। योग ने इस प्राकृतिक घटना की वैज्ञानिक रूप से नकल की है, और इसे एक कृत्रिम या एक जीवन की घटना बना दिया है। यह उसी तरह से है, जैसे बारिश के लिए जिम्मेदार प्राकृतिक अनुकूल परिस्थितियों को कृत्रिम रूप से बनाया जाना असंभव है, लेकिन पॉलीहाउस बनाने से वर्षा पर निर्भरता के बिना, पौधे के जीवन के लिए वांछित स्तर पर नमी बनाए रखने का हमारा उद्देश्य हल हो जाता है।

प्रिय दोस्तों, यह पानी अमृत है, जिसकी सचेतन जीवन/आत्मा के लिए पूरी तरह से परिपक्व होने के लिए आवश्यकता है। पतंजलि का "योगाश्चित्तवृत्तिनिरोधः" (मन का पूर्ण दमन, व्यक्त व अव्यक्त दोनों, ही योग है) भी इसी बात के समान है। वही सांसारिक लोगों की अहंकारहीनता है। अलग-अलग वक्रता के साथ एक ही सक्रिय सिद्धांत है। छोटी सांसारिक अनुभूतियाँ छिटपुट और अक्सर होने वाली बारिश की तरह होती हैं। बारिश के फ़िल्टर किए हुए पानी के संग्रह का गड्ढा अवचेतन मन होता है। बादलों / संवेदकों को संशोधित करने की कोशिश किए बिना (जैसे कि यह असंभव या मूर्खतापूर्ण है) आंखों और कानों की छतों के माध्यम से हलकी वर्षा की बौच्छारों का संग्रहण किया जाता है। अन्य इंद्रियां एक डायवर्टिंग वाल्व की तरह होती हैं, जो फिल्ट्रेशन टैंक की आपूर्ति को बंद कर देती हैं, और गंदे पानी को सीधे उच्च मस्तिष्क केंद्रों में ले जाती हैं, जिससे वहां पर नमी (सनसनी/संवेदना) लगातार बदलती रहती है, जिससे जीवन को नुकसान पहुंचता है। मस्तिष्क के विजुअल/दर्शन और ऑडिटरी/श्रवण केंद्र फिल्ट्रेशन टैंक हैं, जहाँ बुरी चीजें फ़िल्टर की जाती हैं। अष्टांग योग के आसन और प्राणायाम के साथ अंतिम तीन अंग ड्रिप-सिंचाई प्रणाली हैं। "शुद्ध संस्कृत में आध्यात्मिक कथाएँ" 100 hp पंप (सबसे शक्तिशाली) हैं, क्योंकि यह अपनी शक्ति के साथ सुस्त और अशुद्ध मानसिक संवेदनाओं को चुस्त व शुद्ध संवेदनाओं में बदल देता है, ड्रिप चैनलों / तंत्रिका चैनलों के सबसे पतले हिस्से को खोलकर, यहां तक कि अवरुद्ध की गई नलिकाओं को भी खोलकर। पानी / संवेदनाओं को अवचेतन मन से बाहर पंप किया जाता है, और फिर से उससे बची-खुची गन्दगी को फ़िल्टर आऊट किया जाता है। स्वस्थ और स्वच्छ संवेदनाओं के जल-प्रवाह को सूक्ष्म नाड़ी-रूपी ड्रिप-पाईपों/तंत्रिका तंतुओं के माध्यम से सबसे गहरे और उच्चतम मस्तिष्क केंद्र यानी कि दोनों भौहों के बीच में स्थित बिंदु तक पहुँचाया जाता है। इस प्रकार, साफ नमी (सनसनी/संवेदना) का निरंतर और बिना उतार-चढ़ाव के एक जैसा स्तर हासिल किया जाता है। यह उस केंद्र को जीवित और विकसित रखता है। फसल / चेतना की परिपक्वता के दौरान, पानी के इनपुट को बंद कर दिया जाता है (पूर्ण अनासक्ति) और सिस्टम में सभी पानी / संवेदनाओं को समापत होने की अनुमति दी जाती है। इसका मतलब है, सभी unexpressed/संग्रहीत व अव्यक्त संवेदनाएं व्यक्त हो जाती हैं, और इस प्रकार उस चेतना रूपी जीव के द्वारा खा ली जाती हैं, जो शीर्ष के वातानुकूलित भवन/सहस्रार में विकसित हो रहा है। यह फसल की अंतिम परिपक्वता / सुपर-चेतना अवस्था / समाधि है। इसके बाद, कोई भी पानी (उपलब्ध/व्यक्त और साथ ही संग्रहीत) उपलब्ध

नहीं है, इसलिए कोई भी सनसनी/संवेदना (दोनों, होने की भी, और न होने की भी) नहीं रहती, लेकिन परिपक्वता का केवल एक आनंदमय अनुभव महसूस होता है। जल्द ही, फसल की अंतिम कटाई (पूरी तरह से अनासक्ति) होती है, और वही हर्षपूर्ण आनंद पूरी तरह से उस पूर्ण चेतन आत्मा में बदल जाता है, जिसे पानी/संवेदना की आवश्यकता नहीं होती। Unattached/अनासक्त रवैया और अहंकारहीनता POLYHOUSE का कवर / उसे सुरक्षित करने वाला प्लास्टिक शीट का घेरा है। ये यम, नियम और प्रत्याहार अंग हैं। डायवर्ट वाल्व आंखों और कानों के अलावा अन्य इंद्रियों के लिए मिथ्या-नाम है। ये गंदे पानी (अस्वास्थ्यकर संवेदनाओं) के अतिप्रवाह को पैदा करती हैं, जिसके कारण नमी (संवेदना) की अनियमितता पैदा होती है, जिससे चेतना (आत्मा) में अज्ञान का रोग फैलता है। इनका बंद होना ही योग का प्रत्याहार अंग है।

दोस्तों, संभवतः पोलीहाऊस के इन्हीं आध्यात्मिक गुणों के कारण मुझे इससे बहुत से आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त हुए।

इस ई-पुस्तक को पढ़ने के लिए आपका धन्यवाद। अधिक जानकारी हेतु आप वेबसाईट demystifyingkundalini.com पर विजिट कर सकते हैं।

प्रेमयोगी वज्र द्वारा लिखित अन्य पुस्तकें-

1) शरीरविज्ञान दर्शन- एक आधुनिक कुण्डलिनी तंत्र (एक योगी की प्रेमकथा)

2) Love story of a Yogi (what Patanjali says)

3) Kundalini demystified (what Premyogi vajra says)

4) कुण्डलिनी विज्ञान- एक आध्यात्मिक मनोविज्ञान

5) kundalini science- a spiritual psychology

6) The art of self publishing and website creation

7) स्वयंप्रकाशन व वैबसाईट निर्माण की कला

8) कुण्डलिनी रहस्योद्घाटित- प्रेमयोगी वज्र क्या कहता है

9) केंचुआ पालन- एक अध्यात्म-मिश्रित भौतिक शौक

10) ई-रीडर पर मेरी कुण्डलिनी वेबसाईट

11) my kundalini website on e-reader